SRI BHAGAWAN MAHAVEER JAIN EVENING COLLEGE
(Affiliated to Bengaluru Central University)
V V Puram, Bangalore – 560 004

II Sem B.Com - Poetry

कालिदास सच-सच बतलाना

Kalidas sach sach batlana

नागार्जुन की यह कविता छोटी होते हुए भी शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें कवि ने कविता की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। इसमें नागार्जुन बताते है कि कवि अपनी रचनाओं में दुःख, व्यथा, पीड़ा आदि का चित्रण करते है परंतु उसके लिए उसे स्वयं वेदना और पीड़ा से गुजरना पड़ता है। कवि एक प्रकार से परकाय प्रवेश करता है। जब कोई विरहणी नारी विलाप करती है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो कवि उसके मनोभावों को धारण करता है।

यहाँ कवि संस्कृत के महाकवि कालिदास के माध्यम से कविता की रचना प्रक्रिया की बात करते है कि कवि जब अपने काव्य में किसी की विरह व्यथा का चित्रण करता है तब उसे उस कविता की विरह व्यथा को आत्मसात करना पड़ता है।

प्रस्तुत कविता में नागार्जुन जी ने कालिदास के तीन महाकाव्यों का संदर्भ देते हुए इस बात को समझाने का प्रयत्न करते है कि ये तीन महाकाव्य विरह व्यथा से परिपूर्ण हैः

1. रघुवंश 2. कुमार संभव 3. मेघदूत

कविता की शिल्पगत विशेषता यह है कि तीन काव्यों के लिए कवि ने तीन छोटे–छोटे परिच्छेद लिखे हैं और यह परिच्छेद क्रमशः बड़े होते गए है। प्रथम परिच्छेद चार पंक्तियों का, दूसरा परिच्छेद आठ पंक्तियों का व तीसरा परिच्छेद सत्रह पंक्तियों का है।

प्रथम परिच्छेद में कवि कहते है कि हे कालिदास सच–सच बतलाना कि जब रानी इंदुमती का निधन हुआ था तब उसकी मृत्यु पर शोक से विह्वल होकर रघुकुल के राजा विलाप करते है या यह विलाप राजा अज का है या यह तुम्हारा है। ऐसा प्रतीत होता है वहाँ राजा अज नहीं बल्कि कालिदास तुम रोए थे, या तुम स्वयं रोए थे।

दूसरे परिच्छेद में कवि ने कुमार संभव से लिया गया है। असुर (तारकासुर) का वध करने के लिए शिवजी के पुत्र की जरूरत थी और सती की मृत्यु के बाद शिवजी ने तो वैराग्य धारण कर लिया था। अतः शिवजी में पार्वती के प्रति काम भावना जाग्रत करने का कार्य कामदेव को सौंपा जाता है। शिवजी की तपस्या भंग होती है तब वे पार्वती के प्रति अनुरक्त हो जाते है, तदुपरांत शिवजी यह समझ जाते है कि यह कार्य कामदेव का है। अतः उनकी तीसरी आँख से महाज्वाला फूटती है। उसमें जिस प्रकार घी परिपूर्ण सूखी समिधा भड़–भड़ कर जल उठती है, उसमें उसी प्रकार कामदेव भी जलकर भस्म हो जाते है। तब कामदेव के विरह में कामदेव की पत्नी रति फूट–फूटकर करुण विलाप करती है। रति का यह विलाप लोगों के लक्ष्य को हिला देता है। हे कालिदास सच–सच बतलाना तब क्या रति के साथ तुमने अपनी आँखों को नहीं भिगोया था।

तीसरा परिच्छेद मेघदूत से है। मेघदूत कालिदास का विरह काव्य है। इस परिच्छेद में एक यक्ष अपनी प्रियतमा को बहुत चाहता था। वह प्रियतमा को प्रेम में वह इतना डूब जाता है कि वह अपने स्वामी धन के देवता कुबेर की सेवा में चूक हो जाती है। उस समय कुबेर अपना अपमान सहन नहीं कर पाता है और यक्ष को एक वर्ष पृथ्वी पर रहने का अभिशाप देते है। यक्ष पृथ्वी पर आता है। परंतु जब वर्षाऋतु का प्रारंभ होता है तब वह अपने मन पर काबू नहीं रख पाता। आषाढ़ महीने के पहले दिन जब वह घने काले बादलों को देखता है। तब उसका हृदय विरह से व्याकुल हो जाता है। वे अपने दोनों हाथ जोड़ कर चित्रकूट पर्वत से मेघ (बादल) को अपना दूत बनाने के लिए कहते है कि– हे मित्र तुम मेरा संदेश मेरी प्रियतमा तक पहुँचा दो। उन पुष्करावर्त मेघों द्वारा यक्ष अपनी प्रियतमा को संदेश भेजते है। उय समय यक्ष अपनी प्रियतमा के विरह में आठ–आठ आँसूं रोता था। हे कालिदास तुम सच–सच बतलाना उस यक्ष की पीड़ा में पूर–पूर होकर, थक–थककर और चूर–चूर होकर उन अमल धवल गिरि शिखरों पर यक्ष रोए थे अथवा तुम नहीं रोए थे। हे कालिदास यह आँसू यक्ष के नहीं बल्कि तुम्हारे थे।

किष्किन्धा कांड

Kishkindha Kanda

आगे चले बहुरि – रूप स्वामि भगवंत।

संदर्भः– प्रस्तुत पद्य खंड हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य मधुवन के किष्किन्धा कांड नामक शीर्षक से अवतरित है इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के भक्ति कालीन कवि तुलसीदास जी हैं।

प्रसंगः– इसमें कवि ने बालि के भय से सुग्रीव के ऋष्यमूक पर्वत पर छिपकर रहने के प्रसंग तथा राम और लक्ष्मण के परिचय का बड़ा मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है।

व्याख्याः– कविवर तुलसीदास जी कहते हैं कि श्री रघुनाथ जी पुनः आगे प्रस्थान करते हैं। ऋष्यमूक पर्वत निकट गया। वहाँ (ऋष्यमूक पर्वत) पर मंत्रियों सहित सुग्रीव रहते थे। सुग्रीव ने अतुलनीय बल के पुंज श्री रामचन्द्रजी और लक्ष्मण को आते देखा।

सुग्रीव ने अत्यन्त भयभीत होकर हनुमान जी से कहा–हे हनुमान सुनो, ये दोनों पुरुष बल और रुप के निधान हैं। तुम ब्रह्मचारी का रूप धारण करके उनके बारे में सारी सूचना एकत्रित कर (अपने हृदय में उनकी यथार्थ बात जानकर) मुझे इशारे से समझा कर कह देना।

यदि वे मन के मलिन बालि के भेजे हुए हों तो मैं शीघ्र ही इस पर्वत को छोड़कर अन्यत्र कहीँ पलायन कर जाऊँगा। (यह सुनकर) हनुमान जी ने ब्राह्मण का रूप धारण कर वहाँ गए और सिर नवाकर उन (राम और लक्ष्मण) से इस प्रकार पूछने लगे।

हे वीर साँवले और गोरे शरीर वाले आप कौन हैं?, जो क्षत्रिय के रूप में वन–वन में (फिर) भटक रहे हैं। हे स्वामी कठोर भूमि पर कोमल चरणों से चलने वाले आप किस कारण वन में विचरण कर रहे हैं?

मन को हरण (मन को लुभाने वाले) करने वाले आपके सुन्दर कोमल अंग हैं, और आप वन के दुःसह धूप और वायु को सहन कर रहे हैं। क्या आप इन तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में से कोई हैं या आप दोनों नर–नारायण हैं।

आप जगत के मूल कारण और संपूर्ण लोकों के स्वामी स्वयं भगवान हैं, जिन्होंने लोगों को भव सागर से पार उतारने के लिए तथा पृथ्वी का भार नष्ट करने के लिए मनुष्य रूप में अवतार लिया है।

(श्री रामचन्द्र ने कहा–) हम कोसलराज दशरथ जी के पुत्र हैं और पिता का वचन मानकर हम वन में विचरण कर रहे हैं। हमारे नाम राम और लक्ष्मण हैं, हम दोनों भाई हैं। बमारे साथ सुन्दर सुकुमारी स्त्री भी थी।

यहाँ वन में राक्षस ने मेरी पत्नी जानकी का हरण कर लिया। हे ब्राह्मण बम उसे ही वन में खोचते फिर रहे हैं। हमने तो आपसे अपना चरित्र (परिचय) कह सुनाया।अब हे ब्राह्मण अपनी कथा समझाकर कहिए।

प्रभु श्रीराम को पहचान कर हनुमानजी उनके चरणों को पकड़कर पृथ्वी पर गिर पड़े (उन्होंने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया) शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती उस सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका शरीर पुलकित है और मुख से वचन नहीं निकल रहे हैं। वे प्रभु श्रीराम के सुन्दर शरीर की रचना देख रहे हैं।

हनुमान जी ने धीरज धरकर उनकी (श्रीराम की) स्तुति की। अपने स्वामी को पहचान लेने से हृदय में हर्ष हो रहा है। हनुमानजी ने कहा– हे स्वामी मैंने जो पूछा वह मेरा पूछना तो न्यायसंगत था, (वर्षों बाद आपको देखा, वह भी तपस्वी वेष में और मेरी वानरी बुद्धि। इससे मैं तो आपको नहीं पहचान सका। अपनी परिस्थिति के अनुसार मैंने आपसे पूछा) परन्तु आप मनुष्य की तरह कैसे पूछ रहे हैं?

मैं तो आपकी माया के वशीभूत भूला फिरता हूँ, इसी से मैंने अपने स्वामी श्रीराम को नहीं पहचाना।

एक तो मैं यों ही मन्दबुद्धि और दूसरे मोह को वश में हूँ, तीसरे हृदय का कुटिल और अज्ञानी हूँ, फिर भी हे दीनबन्धु भगवान प्रभु आपने भी मुझे भुला दिया।

हे नाथ यद्यपि मुझमें बहुत से अवगुण हैं, तथापि सेवक स्वामी की विस्मृति में न पड़े (आप उसे न भूल जाएं) हे नाथ जीव आपकी माया से मोहित है। वह आप ही की कृपा से निस्तार (भव सागर से पार) पा सकता है।

उस पर हे रघुवीर मैं आपकी शपथ (दुहाई) देकर कहता हूँ कि मैं भजन–साधना कुछ नहीं जानता। सेवक स्वामी के और पुत्र माता के भरोसे निश्चित रहती है। प्रभु को सेवक का पालन–पोषण करते ही बनता (करना ही पड़ता) है।

ऐसा कहकर हनुमानजी आकुल होकर प्रभु श्रीराम के चरणों पर गिर पड़े, उन्होंने अपना असली रूप प्रकट कर दिया। उनके हृदय में प्रेम छा गया। तब श्रीरघुनाथजी ने उन्हें उठाकर अपने हृदय से लगा लिया और अपने नेत्रों के जल से सींचकर हनुमानजी को शांत किया।

हे कपि (हनुमान) सुनो, मन में ग्लानि मत मानना (मन छोटा न करना)। तुम मुझे लक्ष्मण से भी अधिक प्रिय हो। सब कोई मुझे समदर्शी कहते हैं। (मेरे लिए न कोई प्रिय है और न अप्रिय) पर मुझे सेवक सर्वप्रिय हैं क्योंकि वह अनन्य गति होते हैं (मुझे छोड़कर उसका कोई दूसरा सहारा नहीं होता)।

हे हनुमान अनन्य वही है जिसकी ऐसी बुद्धि कभी नहीं टलती कि मैं सेवक हूँ और यह सचराचर (जड़–चेतन) जगत् मेरे स्वामी भगवान का रूप है।